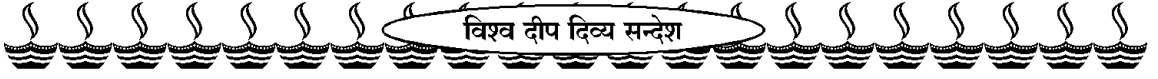


## कोविद -19 (कोरोना)

महावीर सिंह चौहान

कोविद-19 काल त्रासदी, आहूत सर्व संसार।  
स्तब्ध मानव श्रृंखला, बिखरे सद व्यवहार॥  
न देखे हिन्दू-मुस्लिम, न ही गरीब अमीर।  
कोरोना एक अभिशाप है, सब पर करे प्रहार॥  
कोरोना कहर महामारी, जन मानस विनाशक :।  
आय स्रोत, श्रम कौशल, आजीविका प्रथक प्रथक॥  
कोरोना एक रोग, महामारी वायरस कहर।  
अति दोहन संयोग, क्रुद्ध प्रकृति उल्टकर॥  
काम अर्थ-स्थगित करे, धर्म - मोक्ष समर्पणे।  
कोरोना सम वायरस, सामयिक पदार्पणे॥  
संसाधनों का अतिक्रमण, भूमि दोहन अति अति।  
कोरोना सम वायरस, आमंत्रण सद गति गति॥  
जल वायु प्रदुषित हुए, संक्रमित भूमि आकाश।  
वैश्विक चेतना जागृत हुई, रोग कोरोना नाश॥  
अपनाओ सुरक्षा कवच, साधन सुविधा त्यागकर।  
मानवता महत्ता बढी, अर्थ काम अस्वीकार कर॥  
स्वबंधन लोकबंधन, आत्मसंयम परिचायके।  
आर्थिक गतिविधि थमी, सामाजिक सहायके॥  
लोक डाउन पारित हुए, भारत देश महान।  
अक्ष रक्ष साबित हुआ, मुखरित जान-जहान॥  
कोरोना अनुशासनपरक, मृत्यु-दंड प्रदायिनी।  
मोन-व्रत ऐकांत वास गृह-विहार सिखावनी॥  
मास्क धारित आवागमन हो, करबद्ध नतमस्तक हो।  
मधुर शिष्ट संभावना हो, गृह महिमा मर्यादित हो॥



गृह निवास निरंतर हो, जन-जन मध्यांतर हो।  
सनिग्ध आहार सुपाचक हो, जल शीतोष्ण तन सम्यक हो॥  
पुनः पुनः हस्त प्रक्षालन, वस्तु स्पर्श निषेदित हो॥  
सद्विचार सादा जीवन, स्वच्छ पर्यावरण मनोनित हो।  
समृद्ध संपन्न समर्थ जन, दया दान प्रतीक।  
अभाव असहाय अनर्थ मिटे, आहार आवास शरीक॥  
आहार से न हो कोई वंचित, न कोई भूखा शयनी हो।  
जीवन यापन की आवश्यकता से, न कोई दिन दुखी हो॥  
धर्म-भीरूता त्यागकर, नियत नियति शुद्ध करे।  
निर्भीकता व्यवहार, असामाजिक विरुद्ध करे॥  
समाज विरोधी सावधान, असहयोगी फटकार।  
देश द्रोही दंडित हो, राष्ट्र प्रेम साकार॥  
जन सेवाओं के अधिष्ठाता, पुलिस चिकित्सा संधारी।  
यश सम्मान कर्मवीर, हम हो उनके आभारी॥  
गृह गोचर परिणाम, कोविद जीव अनुमान,  
राहु केतु अक्ष से, विदा जून-20 प्रमाण।  
विश्व पटल के मानचित्र में सभ्यताएं उल्टी-पलटी,  
राजा रानी राज तंत्र, कालांतर प्रकृति भटकी॥  
उम्मीद की किरण जगे, उल्लासित हो मानव जीवन ।  
कोरोना कहर पराजित हो, प्रकाशित हो सम तन मन॥  
पर्यावरण परिवेश प्रयासे, पनपाकर प्रकृति संतुलन।  
रख रखाव सामंजस्य अपनाकर, हो लबालब सर-जीवन॥  
अभय साहस और जोश, जीवन में हो विपुल उत्साह।  
पत झड़ के बाद महावीर बसंत प्रवाहित सुगंध अथाह॥

अलसीसर (331025)